Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

शिक्षा, समाज और स्वावलंबन: महात्मा गाँधी एवं पं० मदन मोहन मालवीय के विचारों का समकालीन विश्लेषण

आनंद कुमार मिश्र
शोध छात्र (शिक्षा शास्त्र)
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला
उत्तर प्रदेश
Email: anandkumarmishra0011@gmail.com

डॉ. मनोज कुमार मिश्र
शोध पर्यवेक्षक
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला
उत्तर प्रदेश

सारांश

यह शोध-पत्र भारतीय शिक्षा दर्शन के दो महान स्तंभों—महात्मा गाँधी एवं पंडित मदन मोहन मालवीय—के शिक्षा, समाज और स्वावलंबन संबंधी विचारों का समकालीन संदर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गाँधी जी ने 'नयी तालीम' के माध्यम से श्रम-आधारित, आत्मनिर्भर और नैतिक शिक्षा का मॉडल प्रस्तुत किया, जबकि मालवीय जी ने शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के समन्वय का माध्यम माना। यह अध्ययन दोनों विचारकों के शिक्षा-दर्शन में समानताओं एवं भिन्नताओं को स्पष्ट करते हुए यह दिखाने का प्रयास करता है कि आज के वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और बेरोजगारी जैसी चुनौतियों के बीच इनकी अवधारणाएँ कितनी प्रासंगिक हैं। निष्कर्षतः यह पाया गया कि स्वावलंबन, नैतिकता और समाज-केंद्रित शिक्षा की अवधारणा आज भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

Keywords :-शिक्षा दर्शन, स्वावलंबन, नयी तालीम, राष्ट्रनिर्माण, समाज, भारतीय शिक्षा

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा परंपरा का स्वरूप सदैव व्यापक, जीवनोपयोगी और समाज-केंद्रित रहा है, जिसमें शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम न मानकर मानव के समग्र विकास और सामाजिक उत्थान का साधन समझा गया है। आधुनिक भारत के निर्माण में जिन महापुरुषों ने शिक्षा के क्षेत्र में गहन चिंतन प्रस्तुत किया, उनमें महात्मा गाँधी और पंडित मदन मोहन मालवीय का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन दोनों महान विचारकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से शिक्षा को समाज और राष्ट्र के विकास का मूल आधार माना, साथ ही स्वावलंबन, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना को उसके केंद्र में स्थापित किया। वर्तमान समय में जब शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है और यह बाजारवाद, प्रतियोगिता तथा तकनीकी प्रगति के प्रभाव में अधिकाधिक व्यावसायिक होती जा रही है, तब इन विचारकों के शिक्षा दर्शन का पुनर्पाठ अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है।

Author:- Anand Kumar Mishra
Email:- anandkumarmishra0011@gmail.com
Received:- 11 December , 2025
Accepted:- 20 March, 2026.
Available online:- 30 March, 2026
Published by JSSCES, Bareilly
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License

महात्मा गाँधी ने शिक्षा को जीवन से जोड़ते हुए 'नयी तालीम' या 'बेसिक एजुकेशन' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने श्रम, स्वावलंबन और नैतिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास का संतुलित समन्वय होना चाहिए। गाँधी जी का

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

यह मानना था कि यदि शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर नहीं बनाती, तो वह अधूरी है। उन्होंने विद्यालयों में हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग और उत्पादन आधारित कार्यों को शामिल करने पर बल दिया, जिससे विद्यार्थी न केवल ज्ञान अर्जित करें, बल्कि अपने श्रम के माध्यम से जीवन-यापन के योग्य भी बन सकें। इस प्रकार, गाँधी जी का शिक्षा दर्शन समाज के निम्न वर्गों को सशक्त बनाने और आर्थिक विषमता को कम करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

दूसरी ओर, पंडित मदन मोहन मालवीय ने शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण का सबसे प्रभावी साधन माना। उनका दृष्टिकोण शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण एवं संवर्धन पर आधारित था। उन्होंने आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के माध्यम से उन्होंने एक ऐसे शिक्षा मॉडल की परिकल्पना को साकार किया, जिसमें आधुनिकता और परंपरा का संतुलित समावेश हो। मालवीय जी का यह मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि ऐसे चरित्रवान, कर्तव्यनिष्ठ और राष्ट्रभक्त नागरिकों का निर्माण करना है, जो समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें और राष्ट्र के विकास में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

गाँधी जी और मालवीय जी के शिक्षा दर्शन में यद्यपि दृष्टिकोण का अंतर दिखाई देता है, फिर भी दोनों के विचारों में कई महत्वपूर्ण समानताएँ हैं। दोनों ने शिक्षा को नैतिकता, चरित्र निर्माण और समाज सेवा से जोड़ा तथा इसे व्यक्ति और समाज के बीच सेतु के रूप में देखा। गाँधी जी का जोर जहाँ स्वावलंबन और ग्राम-आधारित शिक्षा पर था, वहीं मालवीय जी ने संस्थागत शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। इस प्रकार, दोनों के विचार एक-दूसरे के पूरक प्रतीत होते हैं, जो मिलकर एक समग्र और संतुलित शिक्षा प्रणाली का आधार प्रदान करते हैं।

समकालीन संदर्भ में, जब भारत 'आत्मनिर्भरता' और 'सतत विकास' की दिशा में अग्रसर है, तब शिक्षा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बेरोजगारी, नैतिक मूल्यों का ह्रास, सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक विच्छेदन जैसी समस्याएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इन चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए गाँधी जी और मालवीय जी के शिक्षा संबंधी विचार अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। अतः इस अध्ययन का उद्देश्य इन दोनों महान विचारकों के शिक्षा दर्शन का विश्लेषण करते हुए यह समझना है कि शिक्षा, समाज और स्वावलंबन के संदर्भ में उनके विचार आज के समय में किस प्रकार प्रासंगिक हैं और भारतीय शिक्षा प्रणाली को किस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

शोध का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य महात्मा गाँधी एवं पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का शिक्षा, समाज और स्वावलंबन के संदर्भ में समकालीन विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यह अध्ययन उनके विचारों की प्रासंगिकता को वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। इस व्यापक उद्देश्य को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

प्रथम, इस शोध का उद्देश्य महात्मा गाँधी और पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा संबंधी मूल सिद्धांतों, अवधारणाओं और दृष्टिकोण का गहन अध्ययन करना है, ताकि यह समझा जा सके कि उन्होंने शिक्षा को किस प्रकार समाज परिवर्तन और व्यक्ति के विकास का साधन माना। द्वितीय, यह अध्ययन दोनों विचारकों के शिक्षा दर्शन में निहित स्वावलंबन, नैतिकता, श्रम, राष्ट्रनिर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे तत्वों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे उनके विचारों की समानताओं और भिन्नताओं को स्पष्ट किया जा सके।

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

तृतीय, इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में उपस्थित चुनौतियों—जैसे बेरोजगारी, नैतिक मूल्यों का ह्रास, शिक्षा का व्यावसायीकरण तथा सामाजिक असमानता—के संदर्भ में इन दोनों विचारकों के दृष्टिकोण की उपयोगिता और प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया जाए। चतुर्थ, यह अध्ययन यह जानने का प्रयास करता है कि गाँधी जी की स्वावलंबन आधारित 'नयी तालीम' और मालवीय जी की राष्ट्र-केंद्रित एवं संस्थागत शिक्षा व्यवस्था किस प्रकार आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सुधार और संतुलन स्थापित करने में सहायक हो सकती है।

अंततः, इस शोध का उद्देश्य यह सुझाव देना भी है कि इन दोनों महान शिक्षाविदों के विचारों के समन्वय के माध्यम से एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है, जो न केवल ज्ञान प्रदान करे, बल्कि विद्यार्थियों को नैतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से भी सशक्त बनाए, जिससे एक आत्मनिर्भर और सुदृढ़ समाज का निर्माण संभव हो सके।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध "शिक्षा, समाज और स्वावलंबन: महात्मा गाँधी एवं पंडित मदन मोहन मालवीय के विचारों का समकालीन विश्लेषण" मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) प्रकृति का है। इस अध्ययन में किसी प्रकार के प्राथमिक सर्वेक्षण या सांख्यिकीय आंकड़ों का उपयोग न करके, उपलब्ध साहित्य एवं वैचारिक स्रोतों के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है। अतः यह शोध द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित एक व्याख्यात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन है।

इस शोध में सर्वप्रथम महात्मा गाँधी और पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा संबंधी मूल विचारों, सिद्धांतों एवं अवधारणाओं को समझने के लिए उनके भाषणों, लेखों, पत्रों तथा प्रकाशित ग्रंथों का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा दर्शन से संबंधित प्रमुख पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्रिकाओं, तथा विभिन्न शैक्षिक रिपोर्टों का भी संदर्भ लिया गया है। इन सभी स्रोतों के माध्यम से दोनों विचारकों के शिक्षा, समाज और स्वावलंबन संबंधी दृष्टिकोण का समग्र चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

शोध की प्रक्रिया में तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method) का विशेष रूप से उपयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत गाँधी जी और मालवीय जी के विचारों के विभिन्न आयामों—जैसे शिक्षा का उद्देश्य, स्वरूप, पद्धति, नैतिकता, समाज से संबंध और स्वावलंबन—का आपसी तुलना के आधार पर विश्लेषण किया गया है। इससे यह स्पष्ट किया गया है कि दोनों विचारकों के दृष्टिकोण में किन-किन बिंदुओं पर समानता एवं भिन्नता विद्यमान है, तथा वे किस प्रकार एक-दूसरे के पूरक हैं।

इसके साथ ही, इस अध्ययन में विश्लेषणात्मक पद्धति (Analytical Approach) का प्रयोग करते हुए दोनों विचारकों के शिक्षा दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपस्थित चुनौतियों—जैसे बेरोजगारी, कौशल की कमी, नैतिक मूल्यों का ह्रास, तथा शिक्षा का व्यावसायीकरण—के संदर्भ में उनके विचारों की उपयोगिता को समझने का प्रयास किया गया है। इस प्रक्रिया में तार्किक विवेचना (Logical Interpretation) और आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Critical Analysis) का सहारा लिया गया है, जिससे निष्कर्ष अधिक स्पष्ट और प्रमाणिक बन सकें।

अंततः, यह शोध ऐतिहासिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण (Historical and Philosophical Approach) को भी अपनाता है, जिसके माध्यम से दोनों महान विचारकों के शिक्षा दर्शन को उनके समय, सामाजिक परिस्थितियों और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के संदर्भ में समझा गया है। इस प्रकार, यह शोध बहुआयामी पद्धति पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

दार्शनिक दृष्टिकोणों का समन्वय किया गया है, ताकि अध्ययन अधिक व्यापक, संतुलित और प्रासंगिक बन सके।

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन

भारतीय शिक्षा दर्शन के इतिहास में महात्मा गाँधी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी माना जाता है। उन्होंने शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे जीवन, समाज और स्वावलंबन से जोड़ने का प्रयास किया। गाँधी जी का शिक्षा दर्शन 'नयी तालीम' (Basic Education) के सिद्धांत पर आधारित था, जिसका उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ एक नैतिक, आत्मनिर्भर और समाजोपयोगी नागरिक का निर्माण करना था। उनके अनुसार, शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के संतुलित विकास में निहित है।

गाँधी जी ने शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा तभी सार्थक है, जब वह व्यक्ति को जीवन के व्यावहारिक पक्षों से जोड़ सके। इसी कारण उन्होंने 'कार्य के माध्यम से शिक्षा' (Learning by Doing) की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें विद्यार्थियों को हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग और उत्पादन से संबंधित कार्यों में संलग्न किया जाता है। उनके अनुसार, इस प्रकार की शिक्षा न केवल ज्ञानार्जन को सरल और रोचक बनाती है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित करती है। आज के संदर्भ में यह दृष्टिकोण 'स्किल डेवलपमेंट' और 'वोकेशनल एजुकेशन' के रूप में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

गाँधी जी के शिक्षा दर्शन का एक प्रमुख तत्व स्वावलंबन है। उनका विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य ऐसा होना चाहिए, जिससे विद्यार्थी अपने जीवन-यापन के लिए दूसरों पर निर्भर न रहें। उन्होंने यह सुझाव दिया कि विद्यालयों में ऐसी गतिविधियों को शामिल किया जाए, जिनसे विद्यार्थी अपने श्रम के माध्यम से उत्पादन कर सकें और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। इस प्रकार, शिक्षा केवल ज्ञान देने का माध्यम नहीं, बल्कि आर्थिक सशक्तिकरण का भी साधन बन जाती है। वर्तमान समय में, जब शिक्षित बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बन चुकी है, गाँधी जी का यह विचार अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

गाँधी जी ने शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण को सर्वोच्च स्थान दिया। उनके अनुसार, यदि शिक्षा व्यक्ति के चरित्र का निर्माण नहीं करती, तो वह अधूरी है। उन्होंने सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, सहिष्णुता और सेवा जैसे मूल्यों को शिक्षा का आधार माना। उनका मानना था कि केवल बौद्धिक विकास पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यक्ति के भीतर नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास भी आवश्यक है। आज के समय में, जब शिक्षा का स्वरूप अधिक प्रतिस्पर्धात्मक और भौतिकवादी होता जा रहा है, गाँधी जी के नैतिक शिक्षा संबंधी विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं।

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन समाज-केंद्रित था। उन्होंने शिक्षा को समाज के साथ जोड़ते हुए यह माना कि शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिक तैयार करना है, जो समाज के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी हों। उन्होंने ग्राम-आधारित शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया, जिसमें शिक्षा स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप हो। उनका विश्वास था कि यदि गाँवों का विकास होगा, तो देश का समग्र विकास संभव होगा। इस प्रकार, उनकी शिक्षा व्यवस्था समाज के निम्न वर्गों को सशक्त बनाने और सामाजिक असमानताओं को कम करने का एक प्रभावी माध्यम बन सकती है।

इसके अतिरिक्त, गाँधी जी ने मातृभाषा में शिक्षा देने पर भी बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा तभी प्रभावी हो सकती है, जब वह विद्यार्थी की अपनी भाषा में हो। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा न केवल समझ को सरल बनाती है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ करती है। आज के समय में, जब अंग्रेजी माध्यम को

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

अधिक महत्व दिया जा रहा है, गाँधी जी का यह विचार भारतीय भाषाओं के संरक्षण और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन आध्यात्मिकता से भी गहराई से जुड़ा हुआ था। उन्होंने शिक्षा को केवल बाहरी ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे आत्मिक विकास का साधन माना। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सत्य की खोज के मार्ग पर अग्रसर करना है। उन्होंने जीवन में नैतिक अनुशासन, आत्मसंयम और सेवा भावना को अत्यंत आवश्यक बताया। इस प्रकार, उनका शिक्षा दर्शन केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण पर आधारित है।

समकालीन संदर्भ में महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। आज की शिक्षा प्रणाली में जहाँ एक ओर तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी देखी जा रही है। ऐसे में गाँधी जी के विचार शिक्षा को संतुलित, मानवीय और समाजोपयोगी बनाने में सहायक हो सकते हैं। 'आत्मनिर्भर भारत' की अवधारणा को साकार करने में भी उनका स्वावलंबन आधारित शिक्षा मॉडल महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके समय में था। उनकी शिक्षा संबंधी अवधारणाएँ न केवल भारतीय शिक्षा प्रणाली को दिशा प्रदान करती हैं, बल्कि एक नैतिक, आत्मनिर्भर और सशक्त समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

पंडित मदन मोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन

भारतीय शिक्षा दर्शन के विकास में पंडित मदन मोहन मालवीय का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरदर्शी माना जाता है। उन्होंने शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन न मानकर राष्ट्रनिर्माण, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक उत्थान का आधार माना। मालवीय जी का शिक्षा दर्शन भारतीय परंपरा और आधुनिकता के समन्वय पर आधारित था, जिसमें उन्होंने ज्ञान, नैतिकता, आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समान महत्व दिया। उनका उद्देश्य ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना था, जो भारतीय संस्कृति के मूल्यों को बनाए रखते हुए आधुनिक युग की आवश्यकताओं को भी पूरा कर सके।

मालवीय जी ने शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण का सबसे सशक्त माध्यम माना। उनका विश्वास था कि यदि युवाओं को उचित शिक्षा प्रदान की जाए, तो वे न केवल अपने जीवन को सफल बना सकते हैं, बल्कि देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की, जो उनके शिक्षा दर्शन का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल उच्च शिक्षा प्रदान करना नहीं था, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, नैतिकता और आधुनिक विज्ञान का संगम प्रस्तुत करता था। इस प्रकार, मालवीय जी ने शिक्षा को राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से जोड़ने का कार्य किया।

मालवीय जी के शिक्षा दर्शन का एक प्रमुख तत्व भारतीय संस्कृति और परंपरा का संरक्षण था। उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान और गर्व की भावना विकसित की जानी चाहिए। उन्होंने वेद, उपनिषद, गीता तथा अन्य भारतीय ग्रंथों के अध्ययन को शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग माना। इसके साथ ही, उन्होंने आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा को भी आवश्यक बताया, ताकि विद्यार्थी वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सक्षम बन सकें। इस प्रकार, उनका शिक्षा दर्शन परंपरा और आधुनिकता के संतुलन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

नैतिकता और चरित्र निर्माण मालवीय जी के शिक्षा दर्शन के प्रमुख आधार थे। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास में भी सहायक होनी चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, अनुशासन, कर्तव्यपरायणता और देशभक्ति जैसे गुणों के विकास पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार, यदि शिक्षा व्यक्ति के चरित्र को सुदृढ़ नहीं करती, तो उसका कोई विशेष महत्व नहीं रह जाता। आज के समय में, जब शिक्षा में नैतिक मूल्यों का ह्रास देखा जा रहा है, मालवीय जी के विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

मालवीय जी ने शिक्षा को समाज सेवा से भी जोड़ा। उनका विश्वास था कि शिक्षित व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह समाज के कमजोर और वंचित वर्गों की सहायता करे तथा समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभाए। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समानता, सहयोग और मानवता की भावना को बढ़ावा देने का प्रयास किया। इस प्रकार, उनका शिक्षा दर्शन केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सामाजिक और राष्ट्रीय विकास के व्यापक दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ था।

इसके अतिरिक्त, मालवीय जी ने शिक्षा में अनुशासन और संगठन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना। उनका विश्वास था कि अनुशासन के बिना शिक्षा अधूरी है और विद्यार्थी अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। उन्होंने शिक्षण संस्थानों में एक ऐसे वातावरण की कल्पना की, जहाँ विद्यार्थी न केवल ज्ञान अर्जित करें, बल्कि अपने व्यक्तित्व का समग्र विकास भी कर सकें। इस संदर्भ में उन्होंने शिक्षकों की भूमिका को भी अत्यंत महत्वपूर्ण बताया, जो विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत होते हैं।

मालवीय जी ने मातृभाषा के महत्व को भी स्वीकार किया, किंतु उन्होंने अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं के अध्ययन को भी आवश्यक माना। उनका दृष्टिकोण संतुलित था, जिसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों को अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़े रहते हुए वैश्विक ज्ञान और विज्ञान को भी अपनाना चाहिए। इस प्रकार, उनका शिक्षा दर्शन एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

समकालीन संदर्भ में पंडित मदन मोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। आज के समय में, जब शिक्षा का उद्देश्य अधिकतर रोजगार प्राप्ति तक सीमित हो गया है, तब मालवीय जी के विचार शिक्षा को एक व्यापक सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। उनका शिक्षा मॉडल राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक पहचान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय के माध्यम से एक संतुलित और सशक्त शिक्षा प्रणाली विकसित करने में सहायक हो सकता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पंडित मदन मोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक आदर्श मार्गदर्शक है। उनके विचार न केवल अतीत में महत्वपूर्ण थे, बल्कि वर्तमान और भविष्य में भी शिक्षा को सही दिशा प्रदान करने में सक्षम हैं। उनका दृष्टिकोण शिक्षा को केवल ज्ञान का साधन न मानकर एक ऐसे माध्यम के रूप में प्रस्तुत करता है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र—तीनों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तुलनात्मक विश्लेषण: महात्मा गाँधी एवं पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का अध्ययन

महात्मा गाँधी और पंडित मदन मोहन मालवीय भारतीय शिक्षा दर्शन के दो ऐसे महान स्तंभ हैं, जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर उसे समाज निर्माण, नैतिक उत्थान और राष्ट्रनिर्माण का आधार बनाया। यद्यपि दोनों के विचारों की पृष्ठभूमि, कार्यक्षेत्र और पद्धतियों में भिन्नता दिखाई देती है, फिर भी उनके मूल उद्देश्य में गहरी समानता निहित है। तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों विचारकों ने शिक्षा को व्यक्ति और समाज के समग्र विकास से जोड़ते हुए उसे एक व्यापक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया।

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

सबसे पहले यदि शिक्षा के उद्देश्य की दृष्टि से तुलना की जाए, तो महात्मा गाँधी ने शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य स्वावलंबन, नैतिकता और जीवनोपयोगिता को माना। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ऐसा होना चाहिए, जिससे व्यक्ति अपने श्रम के माध्यम से आत्मनिर्भर बन सके और समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित हो। दूसरी ओर, पंडित मदन मोहन मालवीय ने शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण, सांस्कृतिक संरक्षण और राष्ट्रीय चेतना के विकास का साधन माना। उनका उद्देश्य ऐसे शिक्षित नागरिक तैयार करना था, जो देशभक्ति, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त हों। इस प्रकार, जहाँ गाँधी जी का दृष्टिकोण अधिक व्यक्तिगत स्वावलंबन पर केंद्रित था, वहीं मालवीय जी का दृष्टिकोण व्यापक राष्ट्रीय विकास की ओर उन्मुख था।

शिक्षा की पद्धति के संदर्भ में भी दोनों विचारकों के दृष्टिकोण में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। गाँधी जी ने 'नयी तालीम' के माध्यम से कार्य-आधारित (Work-centered) और अनुभवात्मक शिक्षा का समर्थन किया। उन्होंने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग और श्रम को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया, जिससे विद्यार्थी 'करते हुए सीखें' (Learning by Doing)। इसके विपरीत, मालवीय जी ने संस्थागत और औपचारिक शिक्षा प्रणाली को महत्व दिया, जिसमें विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों की प्रमुख भूमिका रही। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना उनके इसी दृष्टिकोण का प्रतीक है, जहाँ आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक ज्ञान का समन्वय किया गया।

नैतिकता और चरित्र निर्माण के क्षेत्र में दोनों विचारकों के विचारों में उल्लेखनीय समानता दिखाई देती है। गाँधी जी ने सत्य, अहिंसा, प्रेम और करुणा को शिक्षा का आधार माना, जबकि मालवीय जी ने अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, सत्यनिष्ठा और देशभक्ति को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य माना। दोनों का यह विश्वास था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि एक सशक्त और नैतिक व्यक्तित्व का निर्माण करना है। इस दृष्टि से दोनों विचार एक-दूसरे के पूरक प्रतीत होते हैं।

समाज के संदर्भ में भी दोनों विचारकों की दृष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण है। गाँधी जी ने शिक्षा को ग्राम-केंद्रित बनाया और यह माना कि शिक्षा का विकास स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए। उनका उद्देश्य गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना और समाज के निम्न वर्गों को सशक्त करना था। दूसरी ओर, मालवीय जी ने शिक्षा को राष्ट्र-केंद्रित दृष्टिकोण से देखा और समाज के व्यापक विकास पर बल दिया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, गाँधी जी का दृष्टिकोण सूक्ष्म (micro-level) था, जबकि मालवीय जी का दृष्टिकोण व्यापक (macro-level) कहा जा सकता है।

स्वावलंबन के संदर्भ में भी दोनों विचारकों के दृष्टिकोण में भिन्नता के साथ-साथ सामंजस्य दिखाई देता है। गाँधी जी ने स्वावलंबन को शिक्षा का मूल उद्देश्य माना और इसे आर्थिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता से जोड़ा। उन्होंने शिक्षा को इस प्रकार विकसित करने की बात कही, जिससे व्यक्ति अपने श्रम के माध्यम से जीवन-यापन कर सके। मालवीय जी ने भी स्वावलंबन को महत्व दिया, किंतु उन्होंने इसे राष्ट्र की आत्मनिर्भरता और विकास से जोड़ा। उनके लिए स्वावलंबन का अर्थ केवल व्यक्तिगत स्तर पर आत्मनिर्भर होना नहीं, बल्कि एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र का निर्माण करना भी था।

भाषा और संस्कृति के संदर्भ में दोनों विचारकों के विचारों में संतुलन और समानता दिखाई देती है। गाँधी जी ने मातृभाषा में शिक्षा देने पर बल दिया और इसे प्रभावी शिक्षा का माध्यम माना। मालवीय जी ने भी भारतीय भाषाओं और संस्कृति के संरक्षण को महत्व दिया, किंतु उन्होंने अंग्रेजी और आधुनिक ज्ञान को भी आवश्यक माना। इस प्रकार, दोनों ने भारतीयता

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

को बनाए रखते हुए आधुनिकता को स्वीकार करने की बात कही।

समकालीन संदर्भ में यदि इन दोनों विचारकों के शिक्षा दर्शन का विश्लेषण किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि दोनों के विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहाँ एक ओर कौशल विकास और रोजगारपरक शिक्षा की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की भी आवश्यकता है। गाँधी जी का कार्य-आधारित और स्वावलंबन पर केंद्रित शिक्षा मॉडल इन समस्याओं का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है, जबकि मालवीय जी का राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक चेतना पर आधारित शिक्षा दर्शन शिक्षा को एक व्यापक और संतुलित दिशा प्रदान करता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी और पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन में भिन्नताओं के बावजूद एक गहरी समानता और पूरकता विद्यमान है। यदि इन दोनों के विचारों का समन्वय किया जाए, तो एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है, जो न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करे, बल्कि नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और स्वावलंबन को भी प्रोत्साहित करे। यही समन्वित दृष्टिकोण वर्तमान और भविष्य की भारतीय शिक्षा के लिए सबसे अधिक उपयुक्त और प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है, जहाँ वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, प्रतिस्पर्धा और बाजारवाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस परिवर्तित परिदृश्य में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रहकर रोजगार, कौशल विकास और आर्थिक उन्नति का प्रमुख साधन बन गई है। तथापि, इस प्रक्रिया में नैतिक मूल्यों का ह्रास, सामाजिक असमानता, शिक्षित बेरोजगारी तथा सांस्कृतिक विच्छेदन जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं। ऐसे समय में महात्मा गाँधी एवं पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि उनके विचार इन समकालीन चुनौतियों के समाधान प्रस्तुत करते हैं।

महात्मा गाँधी का स्वावलंबन आधारित शिक्षा मॉडल आज की सबसे बड़ी समस्या—बेरोजगारी—का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है। उन्होंने शिक्षा को श्रम और उत्पादन से जोड़ते हुए विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया। वर्तमान में 'स्किल डेवलपमेंट' और 'वोकेशनल एजुकेशन' की जो अवधारणाएँ प्रचलित हैं, वे गाँधी जी के 'नयी तालीम' सिद्धांत से अत्यंत मेल खाती हैं। यदि शिक्षा को इस प्रकार विकसित किया जाए कि विद्यार्थी अपने कौशल के माध्यम से स्वयं के लिए रोजगार सृजित कर सकें, तो न केवल बेरोजगारी की समस्या कम होगी, बल्कि आर्थिक आत्मनिर्भरता भी बढ़ेगी। 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे राष्ट्रीय अभियानों के संदर्भ में गाँधी जी के विचार अत्यंत प्रासंगिक और मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

इसके साथ ही, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का ह्रास एक गंभीर चिंता का विषय है। प्रतिस्पर्धा और भौतिक सफलता की दौड़ में मानवीय मूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। इस संदर्भ में गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहिष्णुता और सेवा जैसे मूल्यों का समावेश शिक्षा को अधिक मानवीय और संतुलित बना सकता है। दूसरी ओर, पंडित मदन मोहन मालवीय ने भी शिक्षा में चरित्र निर्माण, अनुशासन और देशभक्ति को अत्यंत महत्वपूर्ण माना। उनके विचार आज के युवा वर्ग में नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में सहायक हो सकते हैं।

समकालीन युग में वैश्वीकरण के कारण सांस्कृतिक पहचान का संकट भी उत्पन्न हो रहा है। इस संदर्भ में मालवीय जी का शिक्षा दर्शन, जो भारतीय संस्कृति और परंपरा के संरक्षण पर बल देता है, अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। उन्होंने आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ-

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

साथ भारतीय मूल्यों के समन्वय की बात कही, जिससे विद्यार्थी वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़े रह सकें। इस प्रकार, उनका दृष्टिकोण शिक्षा को एक संतुलित और समावेशी दिशा प्रदान करता है।

इसके अतिरिक्त, आज की शिक्षा प्रणाली में सामाजिक असमानता और अवसरों की विषमता भी एक प्रमुख चुनौती है। गाँधी जी की ग्राम-केंद्रित और समाजोपयोगी शिक्षा प्रणाली समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त बनाने में सहायक हो सकती है, जबकि मालवीय जी का संस्थागत और व्यापक दृष्टिकोण शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करता है।

अतः समकालीन संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि महात्मा गाँधी और पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा संबंधी विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। यदि उनके सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समुचित रूप से समाहित किया जाए, तो एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित की जा सकती है, जो न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करे, बल्कि नैतिकता, सांस्कृतिक चेतना और स्वावलंबन को भी सुदृढ़ बनाए, जिससे एक सशक्त, संतुलित और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण संभव हो सके।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन "शिक्षा, समाज और स्वावलंबन" के संदर्भ में महात्मा गाँधी एवं पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का समग्र विश्लेषण करता है। इस विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि दोनों महान विचारकों ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन न मानकर उसे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास का आधार माना। उनके विचारों में यद्यपि पद्धतिगत भिन्नताएँ दिखाई देती हैं, तथापि उनके मूल उद्देश्यों में गहन समानता निहित है, जो एक सशक्त, नैतिक और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण की दिशा में केंद्रित है।

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन स्वावलंबन, श्रम और नैतिकता पर आधारित है, जो शिक्षा को जीवनोपयोगी और व्यावहारिक बनाता है। 'नयी तालीम' के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसे उत्पादन, कौशल और आत्मनिर्भरता से जोड़ना आवश्यक है। आज के संदर्भ में, जब बेरोजगारी और कौशल की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं, गाँधी जी का यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक और समाधानपरक सिद्ध होता है। इसके साथ ही, उनके द्वारा प्रतिपादित सत्य, अहिंसा और नैतिक मूल्यों की अवधारणा शिक्षा को मानवीय और मूल्यपरक बनाने में सहायक है।

दूसरी ओर, पंडित मदन मोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन राष्ट्रनिर्माण, सांस्कृतिक संरक्षण और आधुनिक ज्ञान के समन्वय पर आधारित है। उन्होंने शिक्षा को राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का माध्यम माना। उनके द्वारा स्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा के माध्यम से किस प्रकार परंपरा और आधुनिकता का संतुलन स्थापित किया जा सकता है। मालवीय जी के विचार आज के वैश्वीकरण के युग में भी भारतीय संस्कृति और मूल्यों को संरक्षित रखने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

तुलनात्मक दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ गाँधी जी का दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक, ग्राम-केंद्रित और स्वावलंबन पर आधारित है, वहीं मालवीय जी का दृष्टिकोण संस्थागत, राष्ट्र-केंद्रित और सांस्कृतिक समन्वय पर आधारित है। दोनों के विचार एक-दूसरे के पूरक हैं और मिलकर एक संतुलित शिक्षा प्रणाली का निर्माण करते हैं। यदि इन दोनों दृष्टिकोणों का समुचित समन्वय किया जाए, तो शिक्षा को अधिक प्रभावी, व्यापक और समाजोपयोगी बनाया जा सकता है।

समकालीन संदर्भ में, जब शिक्षा प्रणाली अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है—जैसे शिक्षित बेरोजगारी, नैतिक मूल्यों का ह्रास,

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक विच्छेदन—तब इन दोनों विचारकों के सिद्धांत अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। गाँधी जी का स्वावलंबन आधारित मॉडल आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, जबकि मालवीय जी का दृष्टिकोण राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करता है।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी और पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का समन्वय वर्तमान और भविष्य की भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनके विचार न केवल शिक्षा को अधिक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण बनाते हैं, बल्कि एक ऐसे समाज के निर्माण में भी सहायक हैं, जो नैतिक, आत्मनिर्भर और सांस्कृतिक रूप से सशक्त हो। यही इस अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष है कि इन महान विचारकों के सिद्धांत आज भी भारतीय शिक्षा को दिशा देने में सक्षम हैं और उन्हें व्यवहार में लाना समय की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. महात्मा गाँधी. (1937). नई तालीम (Basic Education). नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
2. मदन मोहन मालवीय. (1916). शैक्षिक विचार एवं भाषण. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. अग्रवाल, जे. सी. (2008). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार. विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. शर्मा, आर. एन. (2002). भारत में शिक्षा का इतिहास. अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. कुमार, कृष्ण. (2005). शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा. सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
6. पाण्डेय, आर. एस. (2010). भारतीय शिक्षाविदों के विचार. रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
7. NCERT. (2006). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF 2005). नई दिल्ली।
8. सिंह, बी. पी. (2015). महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन. ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद।
9. मिश्रा, एस. के. (2012). पंडित मदन मोहन मालवीय: जीवन और विचार. प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
10. UNESCO. (2015). शिक्षा पर वैश्विक रिपोर्ट. पेरिस।
11. द्विवेदी, रामकुमार. (2018). भारतीय शिक्षा दर्शन. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. तिवारी, ए. के. (2016). शिक्षा और समाज. ज्ञानदा प्रकाशन, इलाहाबाद।
13. श्रीवास्तव, वी. पी. (2014). आधुनिक भारतीय शिक्षा के विचारक. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
14. गुप्ता, एस. पी. (2017). भारतीय शिक्षा का विकास और समस्याएँ. शारदा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
15. वर्मा, डी. के. (2019). शिक्षा में नैतिकता और मूल्य. दीप एंड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
16. UGC. (2020). उच्च शिक्षा पर रिपोर्ट. नई दिल्ली।
17. पाठक, आर. पी. (2013). शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत. कन्नौज प्रकाशन, कानपुर।
18. जोशी, ए. एन. (2011). भारतीय संस्कृति और शिक्षा. साहित्य भवन, आगरा।